Summary of the paper presented in the National Seminar on 'CONTEMPORARY HINDI FICTION' organized by the Department of Hindi, Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College, Pattambi, Palakkad on 16th & 17th Nov.-2017.

ओंमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में उभरता जातीय अंतर्द्वंद्व

डॉ.जयरामन. पी.एन.

भारतीय साहित्य की नींव एक दलित ने डाली है, रामायण के रचयिता आदिकवि वाल्मीकि। इस पर मतभेद तो हो सकता है। किंतु, आधुनिक हिंदी दलित साहित्य के अग्रदूत ओंमप्रकाश वाल्मीकि के शब्दों में – "समूचे साहित्य इतिहास में शंबूक वध दिखाने का साहस सिर्फ वाल्मीकि ही करते हैं। तुलसीदास अपनी रचना रामचरितमानस में इस घटना का जिक्र तक नहीं करते। न ही कालिदास इस घटना का उल्लेख करते हैं। ये तथ्य वाल्मीकि को अस्पृश्यों से जोडते हैं।" (ओंमप्रकाश वाल्मीकि, सफ़ाई देवता, पृ.132.)। आज वाल्मीकि और भंगी एक दूसरे के पर्याय हैं। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि 'वाल्मीकि रामायण 'एक दलित काव्य है।

जिस तरह अफ्रिका के नीग्रो लोगों ने अपने साहित्य को काला साहित्य (Black Literature) कहा है, उसी तरह भारत के हरिजनों ने अपने साहित्य के लिए दलित साहित्य नाम स्वीकार किया है। ओंमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं – "दलित शब्द का अर्थ है जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीडित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, पस्त-हिम्मत, हतोत्साहित्य, वंचित आदि।" (ओंमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृ. 13.)

कंवल भारती का मानना है – "दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है, जिसे कठोर और गंदे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है, जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया है और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही दलित है, और इसके अंतर्गत वही जातियाँ आती है, जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कही जाती हैं।.....दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है, जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीडा को रूपायित किया है। अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उनकी उसी अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के के लिए कला नहीं, बल्कि जीवन का और जीवन की जिजीविषा का साहित्य है। इसीलिए कहना न होगा कि वास्तव में दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहीत्य की कोटि में आता है।" (ओंमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृ. 13-15)

ओंमप्रकाश वाल्मीकि के शब्दों में – "दलित साहित्य जन साहित्य है, यानी मास लिटरेचर (Mass Literature)। सिर्फ इतना ही नहीं, लिटरेचर ऑफ एक्शन (Literature of Action) भी है जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के विरुद्ध आक्रोशजनित संघर्ष है। इसी संघर्ष और विद्रोह से उपजा है दलित साहित्य।.....दलित साहित्य नकार का साहित्य है, ...जिसमें समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का भाव है, और वर्ण व्यवस्था से उपजे जातिवाद का विरोध है।" (ओंमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृ.15-16)। दलित साहित्य समाज सापेक्ष है। तलित रचनाकारों ने साहित्य को अपने मुक्ति आंदोलन का एक हिस्सा बनाया है। डॉ.एन सिंह के शब्दों में – "दलित कवि पसीने में डूबकर पसीने की बात करते हैं।"(ओंमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृ.23.) दलित रचना डॉ.अंबेडकर के जीवन दर्शन और बौद्ध दर्शन से मुख्य ऊर्जा ग्रहण करती है। रजतरानी मीनू का कहना है – "दलित कविता बदतर जीवन-

स्थितियों के खिलाफ बेहतर जीवन परिस्थितियों के लिए यथास्थिति से विद्रोह की कविता है। यह विद्रोह मार्क्स की रक्त-क्रांति जैसा हिंसात्मक, केवल राजनीतिक स्तर पर घटित होनेवाला विद्रोह नहीं है, अपितु बुद्ध, अंबेडकर की रक्तरहित सम्यक क्रांति का प्रेरक मात्र है जो सामाजिक सांस्कृतिक स्तरों पर घटित होनेवाले संतुलित परिवर्तन का आधार है।"(ओंमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृ.24.)

आधुनिक हिंदी दलित साहित्य को एक नयी दिशा, दशा और ऊर्जा प्रदान करने का पूरा श्रेय ओंमप्रकाश वाल्मीकि जी को है। उन्होंने अंधेरी दलित पगडंडियों में क्रांति की मशाल जलाकर चेतना की नयी रोशनी फैला दी है। उनका जन्म 30 जून 1950 को उत्तर प्रदेश के मुसफरनगर जिले के बरला गाँव में हुआ था। कैंसर की बीमारी की वजह से 17 नवंबर 2013 को वे इस दुनिया से चल बसे। वे देहरादून के ओर्डिनेंस फैक्टरी के कर्मचारी थे। उनकी रचनाएँ निम्न लिखित हैं - <u>कविता संग्रह</u> - सदियों का संताप (1989), बस्स, बहुत हो चुका (1997), अब और नहीं (2009), शब्द झूठ नहीं बोलते (2012)।

<u>कहानी संग्रह</u> - सलाम (2000), घुसपैठिए (2003), छतरी (2013)।

आत्मकथा - जूठन - दो भाग (1997, 2015)।

आलोचना - दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र (2001), मुख्यधारा और दलित साहित्य (2010)।

समाजशास्त्रीय अध्ययन - सफाई देवता (2008)

पुरस्कार - डॉ.अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार (1993), परिवेश सम्मान (1995), कथाक्रम सम्मान (2001), न्यू इंडिया बुक पुरस्कार (2004), साहित्य भूषण सम्मान (2008)।

कहानी को जीवन का स्नेपशोट या जीवन का टुकडा कहा जाता है। इस टुकडे के माध्यम से कहानीकार मुख्य पात्र के संपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। मानव ने जब भाषा सीखी है तब से कहानियाँ सुनना-सुनाना शुरू किया होगा।

बहुत पुराने काल से लेकर दलितों की कहानियाँ हम सुनतेआ रहे हैं। रामायण में शंबूक, शबरी, महाभारत में एकलव्य आदि इसके उदाहरण हैं। कबीर जैसे संत कवियों की रचनाओं में जाति-प्रथा के विरोध के साथ दलितों के साथ होनेवाले अन्यायों के खिलाफ आक्रोश भी है। इन रचनाओं में दलितों की समस्याओं का चित्रण तो अवश्य है, किंतु जिसे आज दलित साहित्य मानते हैं, उनकी कोटी में ये रचनाएँ नहीं आतीं। आज दलितों द्वारा लिखित साहित्य को ही दलित साहित्य मानते हैं, उनमें दलितों ने अपने अनुभूत सत्य की, खुरदरे यथार्थों की अभिव्यक्ति करते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कुछ कहानियाँ दलितों के जातीय अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करनेवाली हैं। यह संघर्ष ज़्यादात्तर गाँव छोडकर शहरों में रहनेवाले पढे-लिखे नौकरीपेशा लोगों में दिखाई पडता है। शहर में रहनेवाले ऐसे दलित सोचते हैं कि अपने इर्द-गिर्द के लोग हमें दलित समझने से उपेक्षा की दृष्टि से देखें गे। इसलिए वे अपनी जाति को छिपाकर रहने का हर संभव प्रयास करते हैं। किंतु साथ ही उनके मन में कभी भी अपनी जाति खुल जाने की आशंका भी रहती है। कभी-कभी उनकी यह आशंका सच निकलती है तो उन्हें समाज से घृणापूर्ण व्यवहार सहना भी पडता है। कुछ विद्रोही दलित पात्र ऐसे संदर्भ में अपनी अस्मिता की खोज में निकलते हैं। इस तरह के जातीय अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करनेवाली वाल्मीकि जी की कहानियाँ हैं – भय, कहाँ जाए सतीश, अंधड, कूडाघर, प्राइवेट वार्ड, मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, दिनेशपाल जादव उर्फ़ दिग्दर्शन आदि।

शहर में रहनेवाले एक दलित युवक दिनेश के अपनी जाति खुल जाने के डर और अंतर्द्वंद्व को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करनेवाली कहानी है 'भय'। इस कहानी पर टिप्पणी करते हुए भालचंद्र जोशी लिखते हैं – ''भय' कहानी मनोवैज्ञानिक धरातल पर है। यह दोहरी मानसिकता में फँसे नायक के भय की कहानी है। सवर्ण कॉलोनी में चुपके से रहनेवाले नायक में

जाति के प्रकट हो जाने के भय के साथ ही एक अबोध वराह शिशु की हत्या से उपजा भय भी है। हीनताबोध और हिंसाबोध को केंद्र में रखकर मानवीय संवेदना की अभीव्यक्ति की है, 'भय'।"(हरपाल सिंह आरुष : ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में सामाजीक, लोकतांत्रिक चेतना, पृ. 47)

दलितों के प्रति सवर्णों के अमानवीय व्यवहार और दलित बालक के मानसिक संघर्ष को व्यक्त करनेवाली कहानी है 'कहाँ जाए सतीश?'। मकान मालिक सुदर्शन पंत के परिवारवाले पहले बडे प्यार से सतीश से व्यवहार करते हैं। किंतु डोम समझने पर आधी रात के समय निर्दयता के साथ उस बालक को घर से बाहर कर देते हैं। वह जिस फाक्टरी में काम कर रहा था, उसका मालिक ऐजाज साहब भी उसकी मदद करने के लिए तैयार नहीं होते। इस तरह डोम होने की वजह से उत्पीडित, द्वंद्वग्रस्त एक दलित बालक की बेबसी की कहानी है 'कहाँ जाए सतीश?'।

'अंधड' एक सरकारी वैज्ञानिक लाल के जातीय अंतर्द्वंद्व की कहानी है। पहले वह अपनी जाति को छिपाकर, सगे-संबंधियों से नाता तोडकर शहरी जीवन बिताता है। किंतु अंत में अपनी जातीय अस्मिता की खोज में निकल पडता है। उसकी बेटी पिंकी क्रांतिकारी नयी पीढी का प्रतिनिधित्व करती है। वह कहती है – "किसी भी बदलाव के लिए भागना तो समाधान नहीं होता। भागकर तो हम उसे बढा देते हैं।" (सलाम, पृ. 92)। पिंकी जातीय हीनताबोध से बचकर दलित अस्मिता की खोज करनेवाली सशक्त नारी है। विपरीत परिस्थितियों के सामने पिंकी पराजित नहीं होती है, लडकर आगे बढने का निर्णय लेती है।

'कूडाघर' कहानी दिखाती है कि शिक्षित लोगों के मन में भी जातिवाद जितना प्रबल है। अजब सिंह को जब मकान मालिक डाक्टर एस.सी. समझ लेता है, उसी वक्त घर छोडने को कहता है। शहर में रहनेवाले नौकरीपेशे दलित लोगों को जाति के वास्ते जो संघर्ष झेलना पडता है, अजब सिंह की त्रासदी उसकी ज्वलंत मिसाल है।

अपनी जाति को छिपाकर एक ब्रह्मण युवक को शादी करके जीनेवाली एक दलित युवति और उसके रिश्तेदारों के अंतर्द्वंद्व की कहानी है 'प्राइवेट वार्ड'। यह जातीय हीनता बोध से तडपनेवाले दलितों की कहानी है। 'मैं ब्राह्मण नहीं हूँ' कहानी में वाल्मीकि जी ने ब्राह्मण जाति की केंचुल पहनकर जीनेवाले दलितों के अंतर्द्वंद्व, खोखलेपन आदि की खिल्ली उडायी है, साथ ही अमित, सुनिता जैसे नयी पीढी के विद्रोही पात्रों के ज़रिए दलित अस्मिता की पहचान भी कराई है।

'दिनेशपाल जाटव उर्फ़ दिग्दर्शन' कहानी के मुख्य पात्र दिनेशपाल जाटव अपनी जाति को छिपाकर एक बडेअखबार के कार्यालय में नौकरी हासिल करता है। भूस्कलन में उजड गये दलित गाँव की दयनीय हालत और राहत कर्मचारियों के अमानवीय व्यवहार के समाचार को प्रकाशित करने की वजह से उसे नोकरी नष्ट हो जाती है। समाचार पढकर समाज से कोई प्रतिक्रिया नहीं आती। समाज भी दलितों की समस्याओं से मुँह मोडता रहता है। इस कहानी की माध्यम से वाल्मीकि जी दलितों को संगठित होकर अपने हक के लिए लडने की प्रेरणा देते हैं।

इस तरह वाल्मीकि जी की कुछ कहानियाँ दलितों के जातीय अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करनेवाली हैं। दलित होने के कारण उन्हें कभी-कभी समाज की उपेक्षा झेलनी पडती है, अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। इसलिए कुछ दलित अपनी जाती को छिपाकर जीने का प्रयास करते हैं। किंतु हर समय उनके मन में अपनी जाति के खुल जाने के डर और द्वंद्व बने रहते हैं। इसे अत्यंत मनोवैज्ञानिक ढंग से वाल्मीकि जी ने अपनी कुछ कहानियों के माध्यम से उखेरा है। भारतीय दलित समाज को हीनताबोध से बचाकर अपनी अस्मिता की खोज करके अधिकार के लिए लडने की प्रेरणा देना वाल्मीकि जी का उद्दश्य है।

डॉ.जयरामन.पी.एन.,
असिस्टेंड प्रोफ़ेसर (हिंदी),
सरकारी विक्टोरिया कॉलेज,
पालक्काड।